समाचार स्वरूप प्रकाशनार्थ

विकास एवं प्रकृति के मध्य संतुलन आवशयकः प्रो0 सुरेन्द्र दुबे

24 अगस्त गोरखपुर । "हमारा समाज भूमण्डलीयकरण, बाजारीकरण तथा उत्तर आधुनिकता जैसे विखण्डनवाद से जूझ रहा था, इसी बीच कोविड 19 ने समूची दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले लिया। निश्चित रूप से लाकडाउन से इस स्थिति को कुछ रोका जा सका। पर्यावरणविदों के अनुसार सभी नदियां लगभग 25–30 प्रतिशत तक युद्ध हुई, वायु प्रदुषण भी कम हुआ है किन्तु लाकडाउन स्थायी हल नहीं है। हम प्रकृति संरक्षण के लिए दो तरीके अपनाते हैं– पहला भारतीय परम्परा, जिसमें बताया गया है कि धरती हमारी मां है तथा हम इसकी संताने हैं। दूसरा पश्चिमी विचारधारा जो यह मानती है कि यह धरती व इस पर व्याप्त समस्त सुविधाएं हमारे उपभोग के लिए हैं। भारतीय जीवन दर्शन का यह मानना है कि धरती के समस्त जीव–जन्तु, पेड–पौधे तथा ग्रह–नक्षत्र भी आपस में जुडे हुए हैं और वे हमसे अलग नहीं हैं। हमारा मेरूदण्ड वसुधैव कुटुम्बकम के दर्शन पर आधारित है। हमारे परिवार की संकल्पना पाश्चात्य संस्कृति से अलग रही है। हमारे परिवार में कई पीढी के सदस्य एक साथ रहते हैं, साथ ही हमारे आंगन की तुलसी, बगल के पेड पौधे जैसे– पीपल, बरगद एवं नीम, गांव का कुआं तथा चिडिया गौरैया भी इस कुटुम्ब मे शामिल हैं। कुटुम्ब के मुखिया की यह जिम्मेदारी होती थी की वो सभी की रक्षा करे व ध्यान रखें" उक्त विचार युग पुरूष महन्त दिग्विजय नाथ जी महाराज जी की 51वीं एवं राष्ट्र संत ब्रह्मलीन अवेद्यनाथ जी महाराज के छठीं पुण्य तिथि की पावन स्मृति पर, दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर द्वारा आयोजित सप्त–दिवसीय व्याख्यान माला के पंचम दिवस के व्याख्यान में 21वीं सदी की चुनौतियां एवं मानव जीवन दर्शन विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रो0 सुरेन्द्र दुबे, कुलपति सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु ने व्यक्त किया।

उन्होंने आगे कहा कि यदि हम ऐसे ही प्रकृति का अंधाधुंध दोहन करते रहेंगे तो इसका दुष्परिणाम हमें भुगतना ही होगा। पूर्व में एच. आइ.वी, वर्ड फ्लू, हुदहुद जैसी आपदाएं इसी प्रकार का संकेत रही हैं। यदि विकास के साथ प्रकृति का संतुलन हम नहीं बनायेगे तो आने वाला समय और मुश्किलों से भरा होगा। विकास के अंधे दौड में पर्यावरण को अनदेखा करना सर्वथा अनुचित है। इसके निदान हेतु लोगो को भारतीय जीवन दर्शन को स्वीकार ने हेतु प्रेरित करना होगा। प्रो0 दुबे जी ने महन्त दिग्विजय नाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वय को गोरखपुर के साथ ही पूरे पुर्वांचल में भारतीय जीवन दर्शन पर आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की संकल्पना को प्रणाम करते हुए कहा कि शिक्षा परिषद से संचालित संस्थायें भारतीय संस्कृति को आगे बढाने का श्रेष्ठ कार्य कर रही है। इस हेतु हम इन संतो के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

स्वागत एवं प्रस्ताविकी भाषण डॉ0 विभा सिंह एवं आभार ज्ञापन डॉ. अमरनाथ तिवारी ने की। उक्त कार्यक्रम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों सहित प्रबुद्ध जनों ने सहभाग किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ0 राजशरण शाही द्वारा किया गया।

डॉ0 शैलेश कुमार सिंह
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क
दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर